न्यूज़ पेपर्स एसोसिएशन ऑफ इण्डिया

NEWSPAPERS ASSOCIATION OF INDIA

Volume XVIII वर्ष 18 | No. 08 अंक: 08 | July-2013 जुलाई-2013 | Rs. 5/- per copy

RAID ON THE RIDING PERMITTERS:

Earthquake in the government office! Not natural but by a sudden arrival! Surprise chec up by the boss bringing shake among the officers! Yes, this was the experience felt in the capital city Bangalore in the RTO office branches at Jaynagar and Kormangla, as the Karnataka state transport minister Mr. Ramalinga Reddy. The minister gave a surprise visit to these offices at 11 AM to supervise the work of officers. The visit paved way for revealing the ignorance and negligence of the officers at Jaynagar RTO office.

The office was found even without the RTO officer Gnanendra Kumar even at 11 o clock though the office timings begin from 9 AM. The ARTO officer Mahadev and other staff were also found absent in the office.

The minister pricked with public complaints! The mal administration of the office out bursted! The public came up with a number of complaints about the ignorance of the officers regarding the people's concern. The ticket machine was found without working. The officers were also condemned of mis behaving with the public while taking complaints.

The case of Kormangla officers was also not different. The RTO officer H.T Halaswamy too was absent. They were behaving like dictators who used to change the timings of public complaints by closing at 11 o clock itself instead of being between 9 to 12 PM. The corruption was even found indulging in the issue of smart cards. The officers were also not taking classes while providing learning licenses. They were also strictly proved of signing the attendence almost after 11 AM though had their deadline time by 1015.

Mr. Reddy also visited the TTMC and listened to the public grievances and assured them of finding solutions. He also promissed of completing the construction works of 5 new RTO offices in a faster manner. He also proposed of starting classes to be conducted in colleges. The RTO commissioner Mr. Shrinivas was also present, who told that, the training classes are already being conducted and the learning licenses are being given at colleges. However, the transport minister has now taken charge regarding the corrupted works and has given caution to the RTO officers to be awakened. The transport officers must be awakened in their work, if not they have to face the same scenario one day or the other.

पुलिस भी आम आदमी ही है

देश मे पुलिस को लोग अक्सर गलत निगाह से देखते है और कोशिश करते है की पुलिस से जितना दूर रहा जाए उतना अच्छा है इसका कारण खुद पुलिस प्रशाशन , व राजनीती है देश मे पुलिस की बहादुरी ने बड़े बड़े कामो को अंजाम भी दिया है बड़ी बड़ी उन्चाईयाँ हांसिल की है तो साथ ही साथ एसे भी बहुत सारे काम हैं जिनसे पुलिस को बदनामी भी मिली है सबसे बड़ी बात है तो ये है की हमारा नजरिया कैसा है पुलिस के प्रति । 5 नवम्बर 1963 को जयपुर में पुलिस स्मारक का उद्घाटन करते हुए पंडित नेहरू जी ने कहा था 'हम प्रायः पुलिसकर्मी को अपना फर्ज पूरा करते देखते रहते हैं और अक्सर हम उनकी आलोचना करते हैं। उन पर आरोप भी लगाते हैं जिनमें से कुछ सच भी साबित हो जाते हैं, कुछ गलत, पर हम भूल जाते हैं कि ये लोग कितना कठिन कार्य करते हैं। आज हमें उनकी सेवा के उस नजरिए को देखना है जिसमें वो दूसरों की जान व माल की रक्षाके बदले अपनी जिन्दगी से समझौता कर लेते हैं।

एक बड़ी कहावत सच लगती है जब पुलिस अपने कार्य को बखूबी से पूरा करती है वीरवान बलवान के होत है चिकने पात हाल ही मे हुए आईपीएल स्पॉट फिक्सिंग मामले मे दिल्ली पुलिस ने अपने हुनर को दिखाते हुए कई बुकी, कई उन लोगों को पकड़ा है जो आईपीएल स्पॉट फिक्सिंग मे शामिल थे और उनमे बड़े बड़े नाम भी शामिल है दिल्ली पुलिस ने पहले भी एसे बड़े बड़े कामो को अंजाम दिया है जिसने अंडरवर्ल्ड की नींद हराम कर दी थी और यही हाल आज भी है जब दिल्ली पुलिस ने एक बड़ा खुलासा कर अंडरवर्ल्ड सटोरिओं की नीद हराम कर दी है एसी चीजों को खघेज के आम जनता व मीडिया के सामने रखा है जिनको समझ पाना या जिनके बारे मे सोचना भी मुश्किल

है

एक बात तो मानने वाली है की पुलिस अगर अपनी पे आजाए तो वोह हर एक उस काम को अंजाम देती है जिसके बारे मे कोई सोच भी नहीं सकता है पर क्या करे पुलिस पे भी राजनीती का सरकार का एसा दवाब रहता है की पुलिस चाहके भी अपना काम नहीं कर पाती है कहीं भी किसी तरह के अपराध मे पुलिस किसी को हिरासत मे लेती है किसी मंत्री जी की शिफारिस पे किसी भी मुजरिम तक को छोडना पड़ जाता है और न छोड़े तो उन पुलिस अधिकारिओं का तुरंत तबादला हो जाता है इस का सबसे बड़ा कारण यह भी है की पुलिस विभाग मे भी कई ऐसे आला आधिकारी है जो पुलिस विभाग व आम जनता के लिए नहीं बल्कि मंत्रियों व नेताओं के कहने पे अपने ड्यूटी दे रहे है जिन्हें आम जनता की आवाज का पता ही नहीं चलता है उन्हें सिर्फ अपने बड़े आधिकरिओन की ही आवाज सुनाई देती है । शायद ऐसे पुलिस के आला आधिकारी अपनी ड्यूटी आम जनता के लिए व पुलिस विभाग के लिए दें तो शायद पुलिस को वाकई आम जनता अपना दोस्त समझे और आपराधि पुलिस के नाम से ही काप जाएँगे ।

देश की पुलिस गलत या अपराधी नहीं है हर जगह कुछ न कुछ गलत या सही जरुर होता है कई पुलिस विभाग के ऐसे अधिकारी भी है जिन्होंने देश के लिए अपनी जान तक देदी और अपने खाकी वर्दी पे कभी किसी तरह का दाग नहीं लगने दिया जरुरत है तो हर आम आदमी के नजरिये को ठीक करने की और और पुलिस विभाग को सही तरह से मदद करने की देश का सबसे मजबूत विभाग है पुलिस विभाग और इस पुलिस विभाग को और मजबूत करना हर देशवासी के हाथ मे है।

बोध गया विस्फोटों के मामले में एक हिरासत में

बिहार के बोध गया स्थित महाबोधि मंदिर के भीतर और बाहर हुए सिलसिलेवार बम धमाकों के मामले में राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने आज एक व्यक्ति को हिरासत में लिया। मगध रेंज के पुलिस उपमहानिरीक्षक हसनैन खान ने बताया कि मंदिर परिसर में रविवार को एक पहचान पत्र मिला था और इसी के आधार पर एक व्यक्ति को हिरासत में लिया गया है। खान ने कहा कि एनआईए इस व्यक्ति से पूछताछ कर रही है। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने कहा, ''गया के बाड़ाचट्टी ब्लॉक से ताल्लुक रखने वाले एक संदिग्ध को हिरासत में लिया गया है। हम फुटेज का विश्लेषण कर रहे हैं तथा उसके आधार पर जल्द ही कुछ और लोगों से पूछताछ की जाएगी।''

अधिकारी ने कहा, ''महाबोधि मंदिर में लगे सभी सीसीटीवी कैमरे पूरी तरह से काम कर रहे थे। जैसा कि आपने सीसीटीवी फुटेज में देखा है, दोनों–राज्य सुरक्षाकर्मी और मंदिर के खुद के सुरक्षाकर्मी मौजूद थे। मुझे नहीं लगता कि सुरक्षा मोर्चे पर कोई खामी थी।'' एक उपमहानिरीक्षक और दो पुलिस अधीक्षकों सहित एनआईए की पांच सदस्यीय टीम रविवार को नयी दिल्ली से विशेष विमान से पहुंची और जांच शुरू करने के लिए सीधे महाबोधि मंदिर गई। मंदिर और आसपास के इलाकों में सुरक्षा बढ़ा दी गई है।

बोध गया में रविवार को इंडियन मुजाहिदीन के संदिग्ध आतंकियों ने सिलसिलेवार ढंग से कम तीव्रता के नौ बम विस्फोट किए थे। चार विस्फोट महाबोधि मंदिर परिसर के अंदर और तीन विस्फोट करमापा बौद्ध मठ में हुए। 80 फुट की बुद्ध प्रतिमा और बस अड्डे के नजदीक एक–एक धमाका हुआ। मंदिर के गर्भ गृह और बोधि वृक्ष (जिसके नीचे भगवान बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति हुई थी) को विस्फोटों में कोई नुकसान नहीं पहुंचा।

गया के जिलाधिकारी डी बालामुरगन ने कहा, ''चूंकि एनआईए फिलहाल नमूना एकत्र कर रही है इसलिए जांच पर कुछ कहना उपयुक्त नहीं होगा।'' उन्होंने कहा, ''रविवार की घटना के बाद हमने मंदिर को कभी बंद नहीं किया। सुबह की प्रार्थना हमेशा की तरह 5 बजकर 30 मिनट पर हुई। विस्फोट की घटना लगभग इसी वक्त हुयी थी। रविवार शाम के समय भी 6 बजे से 7 बजे के बीच प्रार्थना हुयी। आज सुबह भी साढ़े पांच से छह बजे के बीच प्रार्थना हुयी।'' उन्होंने कहा, ''एनआई का नमूना एकत्र किया जाना अभी संपन्न हुआ है। मंदिर परिसर को साफ किया जा रहा है। शाम में पांच बजे विशेष प्रार्थना की जाएगी जिसमें सभी मठों के भिक्षु हिस्सा लेंगे। इसके बाद आम लोगों के लिए मंदिर का द्वार खोल दिया जाएगा।''

फ्यूजन फिटनेस का नया ट्रेंड

व्यायाम न सिर्फ शरीर को चुस्ती देता है, बल्कि बैड कोलेस्ट्रॉल को घटाने, दबाव दूर करने, शरीर को लचीला बनाने और रोग–प्रतिरोधक क्षमता बढाने में भी सहायक है। यह व्यक्तित्व को निखारने में भूमिका निभाता है और स्वस्थ बनाता है।

दौर फ्यूजन का है, लिहाजा फिटनेस क्लासेज और जिम खानों में भी आजकल फ्यूजन वर्क आउट्स का ट्रेंड चल निकला है। सुनने में भले ही थोडा अजीब लगे, लेकिन योग के साथ पिलेटीज मिला दें तो नई एक्सरसाइज तैयार हो जाती है– योगालेटीज। बॉलीवुड डांस और एरोबिक्स को मिक्स कर दें तो चटपटा बॉलीरोबिक्स तैयार हो जाता है। मसाला भांगडा पंजाबी लोकनृत्य और एरोबिक्स का कॉम्बो है।

आइए जानें, इन एक्सरसाइज में वास्तव में क्या होता है और ये क्यों इतनी लोकप्रिय हो रही हैं।

योगालेटीज

यह पूर्व और पश्चिम का मेल है। इसमें पूरे शरीर की स्ट्रेचिंग होती है। सांस पर नियंत्रण, संतुलन और सही पॉश्चर सिखाया जाता है। इससे शरीर के हर हिस्से का वर्कआउट हो जाता है। योग और पिलेटीज का आपसी तालमेल बेहतर है, क्योंकि दोनों में ही कुछ दिलचस्प क्रियाएं होती हैं और दोनों में सांस को नियंत्रित करना सिखाया जाता है।

बॉलीरोबिक्स

अगर बॉलीवुड के गानों पर थिरक सकते हैं तो वर्कआउट में परेशानी नहीं होगी। इससे एंटरटेनमेंट के साथ–साथ पूरे शरीर का वर्कआउट हो जाता है। स्ट्रेस या डिप्रेशन दूर करने के लिए भी यह परफेक्ट वर्क आउट है। सबसे अच्छी बात यह है कि आजकल स्त्रियां इन प्रयोगों के जरिये स्वस्थ जीवनशैली अपना रही हैं।

मसाला भांगडा

यह भी बॉलीरोबिक्स की तरह है। इसमें भांगडा के साथ एरोबिक्स को मिलाया गया है। दिल्ली व मुंबई के जिमखानों में यह बहुत पॉपुलर हो रहा है। आजकल कई जिम ट्रेनर भांगडा व बॉलीवुड स्टेप्स को लेटिनो–अमेरिकन जुंबा बीट्स के साथ भी मिला रहे हैं। स्मॉल डंबल्स के साथ बीट्स पर डांस भी खासा पॉपुलर हो रहा है।

क्यों है लोकप्रियता

फ्यूजन वर्कआउट में दो या तीन तरह की व्यायाम शैलियों को मिलाया जाता है। इसकी अच्छी बात यह है कि हर शैली से बेहतरीन क्रियाएं इसमें ली जाती हैं। पूरे शरीर का व्यायाम हो जाता है। यह परंपरागत व्यायाम या योग की एकरसता को तोडता है। इसमें जबर्दस्त ऊर्जा के साथ मस्ती का माहौल रहता है, क्योंकि इसे कई लोग साथ मिलकर करते हैं। यह शरीर के मेटाबॉलिज्म को दुरुस्त रखता है। इससे कंधे, बांहें, पैर और पेट को सुडौल बनाने में मदद मिलती है। अगर किसी बीमारी से ग्रस्त हैं या सर्जरी हुई है तो भी इंस्ट्रक्टर की मदद से आसान विकल्प आजमाए जा सकते हैं। यहां एक्सरसाइज के बंधे हुए नियमों के बजाय शरीर और सेहत को रास आने वाली क्रियाएं कराई जाती हैं। फ्यूजन का मकसद है–व्यायाम को मनोरंजक अंदाज में प्रस्तुत करना और हर उम्र के लोगों के बीच पॉपुलर बनाना।

फ्यूजन का प्रभाव

व्यस्त और भागदौड भरी लाइफस्टाइल के लिए फ्यूजन वर्कआउट बेहतर विकल्प है। इसमें एरोबिक्स के साथ ग्लैमर भी जुडा है। ये मूविंग एक्सरसाइजेज हैं, जिनसे कैलरी तो कम होती ही है, शरीर को भीलयबद्धता मिलती है। खासतौर पर पेट और बांहों के आसपास सैल्युलाइट घटाने में मदद मिलती है और बॉडी शेप में आती है। लेकिन वजन कम करने के लिए फ्यूजन का कोई रोल नहीं है। वजन घटाना है तो योग, परंपरागत व्यायाम के साथ सही खानपान ही काम आएगा। योग इस दिशा में महत्वपूर्ण है, जिससे मन और शरीर दोनों का व्यायाम हो जाता है और सही नतीजे भी मिलते हैं।

ध्यान रखें, जोश में आकर पहले दिन से ही इन एक्सरसाइज के लंबे–लंबे सेशन न लेने लगें। इंस्ट्रक्टर की मदद से इन्हें करें और धीरे–धीरे इनका समय बढाएं।

चिंता से दूरी है जरूरी

अकसर हमारे सामने कुछ ऐसी स्थितियां पैदा हो जाती हैं, जिनकी वजह से हम चिंतित हो जाते हैं। यह हमारे मन की स्वाभाविक प्रक्रिया है, लेकिन समस्या तब आती है, जब कोई व्यक्ति छोटी–छोटी बातों को लेकर हमेशा चिंतित रहने लगे या किसी परेशानी का हल ढूंढ कर उससे बाहर निकलने के बजाय लगातार उसी के बारे में सोचता रहे। यह उसके लिए खतरे का संकेत है।

(जनरलाइज्ड एंग्जॉयटी डिसॉर्डर), ओसीडी (ऑब्सेसिव कंपल्सिव डिसॉर्डर) और फोबिया जैसी गंभीर मनोवैज्ञानिक समस्याओं को जन्म देती है। इसलिए जहां तक संभव हो चिंता को अपने आसपास फटकने नहीं देना चाहिए।

अपनी इच्छा के अनुकूल कोई कार्य नहीं होने पर चिंतित होना स्वाभाविक है, पर छोटी–छोटी बातों के लिए हमेशा अनावश्यक रूप से चिंतित होना व्यक्ति को मानसिक रूप से सुस्त और निराशावादी बना देता है। आनुवंशिकता की वजह से भी कुछ लोगों को चिंतित रहने की आदत होती है। अगर घर में माता–पिता या परिवार के किसी अन्य सदस्य को चिंतित रहने की आदत हो तो बच्चे के व्यक्तित्व पर भी इसका नकारात्मक प्रभाव पडता है और उसमें भी चिंतित रहने की आदत विकसित हो जाती है। लगातार परेशानी भरे अनुभवों का सामना, आत्मविश्वास में कमी और जिम्मेदारियों का बढता दबाव भी चिंता का प्रमुख कारण है। इसके अलावा सिरोटोनिन हॉर्मोन की कमी की वजह से भी चिंता होती है।

❑ सबसे पहले शांत मन से विचार करें कि किन बातों की वजह से आपको ज्यादा चिंता होती है।

❑ अपनी चिंता की सही वजह जानने के बाद सकारात्मक ढंग से समस्या समाधान की ओर कदम बढाएं, पर उसी मुद्दे पर बहुत ज्यादा न सोचें।

❑ जहां तक संभव हो खुद को व्यस्त रखने की कोशिश करें।

❑ नियमित रूप से एक्सरसाइज, योगाभ्यास और मॉर्निंग वॉक करें। इससे ब्रेन से एंडोर्फिस नामक हॉर्मोन का सिक्रीशन होता है, जो तनाव को दूर करने में सहायक होता है।

❑ कई बार हमारे सामने ऐसी स्थितियां आती हैं कि हम चाह कर भी कुछ नहीं कर पाते। ऐसे में चिंतित होने के बजाय सही समय का इंतजार करें।

❑ खानपान की आदतों और जीवनशैली में बदलाव लाएं। जंक फूड, चाय–कॉफी, एल्कोहॉल और सिगरेट जैसी चीजें थोडे समय के लिए चिंता से राहत जरूर दिलाती हैं, लेकिन इनकी अधिक मात्रा मस्तिष्क की कार्यक्षमता घटती है।

❑ सकारात्मक सोच अपनाएं। अच्छी किताबें पढें और खुशमिजाज लोगों के साथ वक्त बिताएं।

प्रकृति के साथ बिताएं कुछ पल

हमेशा स्वस्थ और सक्रिय बने रहने के लिए तन के साथ–साथ मन को भी आराम की जरूरत होती है, लेकिन कहां मिल पाता है मन को चौन? यह सही है कि इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स की वजह से हमारे लिए कई काम आसान हो गए हैं, लेकिन इन चीजों के आकर्षण में हमारा मन इतना अधिक उलझ जाता है कि एक सीमा के बाद ये गैजेट्स तनाव का कारण बन जाते हैं।

तनाव बढाते गैजेट्स आज हमारी जीवनशैली ऐसी हो गई है कि महानगरों में रहने वाला हर व्यक्ति प्रतिदिन औसतन 14 घंटे कंप्यूटर, टीवी, लैपटॉप और मोबाइल जैसे इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के साथ व्यतीत करता है। ऐसी चीजें अब लोगों के लिए एडिक्शन बनती जा रही हैं। यहां तक कि लोग छुट्टियों में भी गैजेट्स को अपने साथ ले जाते हैं। इनकी वजह से लोगों की कल्पनाशीलता और रचनात्मकता नष्ट हो रही है। इंटरनेट पर बढती निर्भरता लोगों की स्मरण शक्ति कमजोर कर रही है।

अमेरिका के यूनिवर्सिटी ऑफ उटा के शोधकर्ताओं का दावा है कि कामकाज के बीच में मोबाइल और इंटरनेट जैसी चीजों से थोडी दूरी बनाना दिमाग की सेहत के लिए बहुत अच्छा होता है। शोध के अनुसार अगर इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स से दूरी बनाते हुए प्रकृति के साथ चार दिन भी बिताए जाएं तो इससे सोचने–समझने की क्षमता में 50 प्रतिशत तक इजाफा होता है। इसीलिए आजकल विशेषज्ञ डिजिटल डिटॉक्सीफिकेशन की सलाह देते हैं, जिसके अनुसार कुछ महीनों के अंतराल पर छोटा सा ब्रेक लेकर हमें कुछ दिन प्रकृति के साथ बिताने चाहिए। अगर आप खुद को रीचार्ज करना चाहते हैं तो छुट्टियों में अपने मोबाइल और लैपटॉप को चार्ज करना भूल जाएं। रिसर्च के अनुसार जब आप गैजेट्स से दूर प्रकृति के साथ कुछ दिन बिताते हैं तो इससे आपकी स्मरण शक्ति मजबूत होती है। इस शोध के अनुसार जब हम टेक्नोलॉजी के साथ बहुत ज्यादा व्यस्त रहते हैं तो इससे हमारे मस्तिष्क के कोरटेक्स क्षेत्र पर बहुत ज्यादा दबाव पडता है। इससे हमारी स्मरण–शक्ति और ध्यान केंद्रित करने की क्षमता कम होती है। मोबाइल के रेडिएशन से ब्रेन ट्यूमर का खतरा बढ जाता है। इसलिए अगर छुट्टियों में टेक्नोलॉजी से थोडी दूरी बना ली जाए तो इससे हमारा दिमाग अच्छी तरह काम करने के लिए रीचार्ज हो जाता है। टेक्नोलॉजी से दूर होने का मतलब है– सोशल और प्रोफेशनल लाइफ की चिंताओं से दूर सुकून के कुछ पल बिताना। ऐसा करने से हमारे ब्रेन से इंडोर्फिस नामक ऐसे हॉर्मोन का स्राव होता है, जो हमें खुशी का एहसास दिलाता है।

छुट्टियों में खुद को इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों से दूर रखना वाकई मुश्किल है, लेकिन थोडी सी कोशिश की जाए तो हमें इसके सकारात्मक परिणाम नजर आएंगे :

❑ मानसिक थकान दूर करने के लिए किसी ऐसे पर्यटन स्थल का चुनाव करें, जो प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर हो।

❑ कुछ लोग लगातार सुंदर दृश्यों की तसवीरें लेने में व्यस्त रहते हैं। इससे उनका सारा ध्यान कैमरे पर ही केंद्रित रहता है और वे प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद नहीं उठा पाते।

❑ ध्यान रहे कि आप अपने सुकून के लिए छुट्टियां बिताने जा रहे हैं, दूसरों को दिखाने के लिए नहीं। इसलिए वहां जाकर फेसबुक पर स्टेटस और फोटो अपलोड करने की जल्दबाजी न दिखाएं।

❑ अगर सुरक्षा की दृष्टि से साथ में मोबाइल ले जाना जरूरी हो तो उसे साइलेंट मोड पर रखें। सिर्फ अत्यावश्यक फोन कॉल्स और मेसेजेज के ही जवाब दें।

❑ छुट्टियों पर जाने से पहले अपने ऑफिस के कामकाज इस तरह निबटा लें कि वहां आप पूरी तरह तनावमुक्त रहें।

❑ अगर आपके साथ बच्चे हैं तो उन्हें वीडियो गेम्स से दूर रखें और प्राकृतिक सौंदर्य से रूबरू कराएं।

Hema Malini-Dream Girl of India

Hema Malini is an Indian actress, director and

producer, Bharatanatyam dancer-choreographer, a politician. Making her acting debut in Sapno Ka Saudagar (1968), she went on to appear in numerous Bollywood films, most notably those with actor and future-husband Dharmendra and with Rajesh Khanna. Malini is regarded as one of the greatest and most influential actresses in the history of Indian cinema. She was initially promoted as "Dream Girl", and in 1977 starred in a film of the same name.During this period, she established herself as one of Hindi cinema's leading actresses, noted for both her comic and dramatic roles, her beauty, and her accomplished classical dancing.

Malini is among the most successful female film stars in the history of Indian cinema.Appearing in over 150 films in a career span of 40 years, she has starred in a large number of successful films, and her performances in both commercial and arthouse cinema, were often recognised.During her career, she has been nominated 11 times for the Filmfare Award for Best Actress, of which she won once in 1972. In 2000, she was presented with the Filmfare Lifetime Achievement Award. In the same year, she was honoured with the Padma Shri, the fourth-highest civilian honour, by the Government of India.In 2012, the Sir Padampat Singhania University conferred an Honorary Doctorate on Malini in recognition of her contribution to Indian cinema. She also served as the Chairperson of the National Film Development Corporation. She was awarded the prestigious "SaMaPa Vitasta Award 2006" in Delhi by SaMaPa - "Sopori Academy of Music And Performing Arts" by Music Legend Pandit Bhajan Sopori for her lifetime contribution and service to Indian culture and Dance.

Of late Malini spends most of her time on charitable and social ventures, while making occasional appearances in films. She is a member of India's Bharatiya Janata Party and was nominated member by the party in Rajya Sabha, the upper House of parliament during 2003-2009.

Hema Malini Chakravarthy was born into a Tamil speaking Iyengar Brahmin family in Ammankudi, Tiruchirappalli to V.S. Ramanujam Chakravarthy and Jaya Chakravarthy on 16 October 1948. Her mother was a film producer. Malini was the youngest of the three children and has two brothers. She was not interested in academic studies but enjoyed history, her favourite subject in school. She was educated at Andhra Mahila Sabha in Chennai.She studied at DTEA Mandir Marg till class 10 but did not complete class 10 when she got acting role.

Hema fell in love with her co-star Dharmendra during the filming of Sholay. She eventually married him in 1980. Before they married, they both converted to Islam, though the conversion was nominal and for convenience only; Hema remains a strong practising Hindu since Dharmendra was married to Prakash Kaur who refused to divorce him. Apart from Sholay, the Dharmendra-Hema pair appeared together in films like Seeta Aur Geeta, Dreamgirl, Charas and The Burning Train. After her marriage she became the step-mother of Sunny Deol and Bobby Deol, both popular actors in Bollywood. She has two daughters with Dharmendra, Esha Deol (born 1981) and Ahana Deol (born 1985). Her elder daughter Esha is a well-known actress in Bollywood who married a diamond merchant Bharat Takhtanj, on 29 June 2012: while her younger daughter Ahana is an aspiring director who worked as an assistant director to Sanjay Leela Bhansali for his film Guzarish (2010)

Hema Malini and her husband have been involved in politics, as members of the Bharatiya Janata Party (BJP). She was elected to the Rajya Sabha, the upper house of the Parliament of India, with the support of the Bharatiya Janata Party.She campaigned for the BJP candidate, Vinod Khanna, former Bollywood actor in the 1999 Lok Sabha Elections in Gurdaspur in Punjab. In 2004, Hema Malini joined the Bharatiya Janata Party. In February 2004, she joined the party (BJP) officially.With her film career less hectic, she has been an active member

of the party, attending party meetings and rallies and campaigning for the party through various elections. In March 2010, she was made general secretary of the BJP. In February 2011, it was reported that Hema Malini has been recommended by H.N.Ananth Kumar, party general secretary

After taking a break from films for a number of years, Hema made a comeback with Baghban (2003). The film had Amitabh Bachchan playing her husband and also earned her a Film fare Best Actress Award nomination. She also played a cameo in the 2004 film Veer-Zaara. In both films, she played a self-possessed, elderly married woman. In 2011, she directed her second feature film that featured her daughter Esha Deol in the lead role alongside her husband Dharmendra in Tell Me O Khuda which released on Diwali of 2011.

सम्पादकीय

उत्तराखंड मे जो हुआ देवी देवताओं का अभिशाप है

❑ विपिन गौड़

कई लम्बे समय से उत्तराखंड मे कई जगहों पर ऐसे निर्माण हो रहे थे जिनको लेकर साधू संतों ने एतराज जताया था और कहा था की इन निर्माणों से पहाड़ों मे कई प्रकार की मुसीबत आ सकती है कई निर्माणों के लिए आम जनता ने भी सरकार से लड़ाई की पर ऐसे निर्माण चलते रहे को कुदरत के खिलाफ थे और कुदरत ने बार बार छोटी छोटी घटनाओ से सूचित भी किया की कुदरत के खिलाफ जाना बहुत गलत है पर फिर भी पहाड़ों तो तोडा गया नदियों के रुख बदले गए और नक्षा हे बदल दिया कुदरती नजारे का और आज देखने को मिल रहा है कुदरत का कहर उत्तराखंड मे चेहरा हे बदल दिया खुबसूरत उत्तराखंड का शायद किसी ने सपने मे भी नहीं सोचा होगा की उत्तराखंड मे कभी ऐसा भी होगा।

न जाने कितने घर बेघर हो गए देश मे और इसमे सबसे बड़ा हाथ है सरकारों का जिन्होंने कुदरती चीजों से लोहा लिया बड़ी बड़ी कंपनी के साथ मिलकर सरकार ने पहाड़ों मे तोड़ फोड़ की कुदरत के खिलाफ कुदरती मंदिरों नदिओं पहाड़ों के साथ छेड़ छाड़ की हाल ही की एक बड़ी घटना याद है मुझे श्ह्रीनगर मे धारी देवी के मंदिर की किस पर बहुत बड़ा बवाल भी हुआ सरकार ने बिजली परियोजना के लिए मंदिर को तोडके दूसरी जगह पुर्नस्थापना की योजना बने जिस पर उत्तराखंड के आम नागरिकों ने एतराज भी जताया और वहां के पंडितों ने साधू संतों ने भी कहा की मंदिर से छेड़ छाड़ न की जाए अगर की तो बड़ा नुक्सान भुगतना पड़ेगा मंदिर मसले पर उमा भारती ने भी एतराज जताया था और कहा था मंदिर के साथ छेड़ छाड़ न करे तब प्रधानमंत्री ने आश्वासन दिया था कि श्रीनगर बिजली परियोजना के लिए धारी देवी मंदिर से छेड़छाड़ नहीं की जाएगी। बाद मे सूचना मिली कि उत्तराखंड सरकार 13 मई को परियोजना के नाम पर धारी देवी मंदिर को तोड़ने जा रही है। उमा ने कहा कि प्रधानमंत्री के आश्वासनों और अपेक्षाओं के अनुरूप धारी देवी मंदिर की हर सूरत में रक्षा की जानी चाहिए। पर कंपनी के साथ सरकार ने अपनी जेब गरम करने के लिए देवी के मंदिर को भी नहीं छोडा ।

पौराणिक कहावतों मे कहा जाता है धारी देवी का मंदिर कई सौ साल पहले लोगो की रक्षा के लिए बनाया गया था देवी ने बड़ी बड़ी आपदा से लोगों को बचाया और हमेशा से है सभी की रक्षा भी की मंदिर टूटने से पहले भी देवीय शक्तिओं ने भी चेतावनी दी थी अगर मंदिर टुटा तो बड़ी मुसीबत आ सकती है पर फिर भी मंदिर को सरकार के आदेश से तोड़ दिया गया जिसका नतीजा आज बेकसूर और मासूम लोग झेल रहे है कुदरत के साथ छेड़ छाड़ करेंगे तो कुदरत अपनी शक्तिओं से कयामत भी लेगा और वही देहने को मिला उत्तराखंड मे कई हजार लोग लापता है सारे रस्ते टूट गए है चेहरा हे बदल गया है देव भूमि उत्तराखंड का शायद अगर धारी देवी मंदिर न टुटा होता तो आप ऐसा भयानक नजारा देखने को नहीं मिलता कुदरत का कहर मासूमों की जान नहीं लेता पर क्या करे सरकार को इस बात का कोई गम नहीं उन्हें परियोजना बनानी है और पहाड़ों को तोडना है नदियों को खराब करना है ।

देश भर मे मातम छाया हुआ है कई आँखे कई दिनों से सोई नहीं है अपनों के आने का इंतजार कर रही है कई घर गमो मे दुबे हुए है कई चेहरों की ह्हंसी खो गई है ये हाल सिर्फ उनका ही नहीं है जिनके अपने उत्तराखंड मे फंसे हहुए है ये हाल उन सभी का है जिन्होंने इस घटना को देखा और सुना है मेरे भी आंसू निकल गए कुदरत के कहर से जब एक बड़ा विनाश देखा ये लेख बहुत दुःख मे लिखा सरकार ने हाथ खड़े कर दिए की सुरक्षा के इंतजाम नहीं है जद से जद लोगों को नहीं बचा पा रहे है शर्म आती है अपने ही देश की सरकार पर जो विनाश की तरफ ले जाती है और मुसीबत मे फंसे लोगों की मदद नहीं कर पाती है अगर ऐसा ही चलता रहा तो सिर्फ उत्तराखंड ही नहीं देश का भी विनाश दूर नहीं।

"प्रकृति का प्रतिशोध !"

❑ दिलीप कुमार

भगवान भोले नाथ बड़े भोले हैं, लेकिन जब उनका गुस्सा फूटता है तो सर्वनाश होता है। देवभूमि उत्तराखंड में आई भयंकर प्राकृतिक आपदा को इसी गुस्से के प्रतीक रूप में देखने की जरूरत है। यह भूक्षेत्र प्राकृतिक संपदा से भरा पड़ा है। लेकिन जिस प्रकार से उत्तराखंड विकास की अग्रिमपंति में आ खड़ा हुआ था। वह विकास भीतर से कितना खोखला था, यह इस आपदा ने साबित कर दिया। बारिश, बाढ़, भूस्खलन, बर्फ की चट्टानों का टूटना और बादलों का फटना, अनायास या संयोग नहीं है, बल्कि विकास के बहाने पर्यावरण विनाश की जो पृष्ठभूमि रची गई, उसका परिणाम है। तबाही के इस कहर से यह भी साफ हो गया है कि आजादी के 65 साल बाद भी हमारा न तो प्राकृतिक आपदा प्रबंधन प्राधिकरण आपदा से निपटने में सक्षम है और न ही मौसम विभाग आपदा की सटीक भविष्यवाणी करने में समर्थ है। विज्ञान कितना बौना है, यह सबके सामने आ गया। भागीरथी, अलकनंदा और मंदाकिनी का रौद्र रूप देखकर कलेजा बैठ गया। इसका एक ही कारण है विकास की जल्दबाजी में पर्यावरण की अनदेखी करना। ऐसा लगता है उत्तराखंड को किसी की नजर लग गयी। इसकी बेशकीमती भंडार को सत्ताध ाारियों और उद्योगपतियों की नजर लग गई। उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश से विभाजित होकर 9 नवंबर 2000 को अस्तित्व में आया। 13 जिलों में बटे इस छोटे राज्य की जनसंख्या 1 करोड़ 11 लाख है। 80 प्रतिशत साक्षरता वाला यह प्रांत 53,566 वर्ग किलोमीटर में फैला है। यह भागीरथी, अलगनंदा, सौंग, गंगा और यमुना जैसी बड़ी और पवित्र मानी जाने वाली नदियों का उद्गम स्थल भी है। इसीलिए इसे ध र्म–ग्रंथों में देवभूमि कहा गया है। इस देवभूमि पर ही ईश्वर का प्रकोप हुआ। यही तो सोचने वाली बात है। प्राकृ तिक संपदाओं से भरपूर यह देवभूमि आज निर्धन हो गयी। सब कुछ तहस नहस हो गया। ऐसा लगता है जैसे देव और राक्षस के युद्ध में दानव विजयी हो गये। उत्तराखंड जब स्वतंत्र राज्य नहीं बना था, तब यहां पेड़ काटने पर प्रतिबंध था। होटलों को नदियों के तटों पर नहीं बनाए जा सकते थे। यहां तक कि निजी आवास भी बनाने पर प्रतिबंध था। लेकिन जैसे ही यह उत्तर प्रदेश से अलग हुआ, केंद्र से इसे बेहिसाब धनराशि मिलना शुरू हो गई। ठेकेदारों ने यहां काम लेना शुरू कर दिया। वे नेताओं और नौकरशाहों का एक मजबूत गठजोड़ बना लिया। इसके बाद शुरू हुआ प्राकृतिक संसाध ानों के लूट। ऐसा लूटा की देवभूमि खोखली हो गई। देखते ही देखते भागीरथी और अलकनन्दा के तटों पर बहुमंजिला होटल और आवासीय इमारतों की कतार लग गई।

उत्तराखंड के गढ़वाल क्षेत्र में कुदरत ने जिस तरह का कहर बरसाया है उसे देखते हुए अब उस राज्य के कुमाऊं क्षेत्र पर भी सवाल उठने लगे हैं। कुमाऊंनी शहर नैनीताल में पहाड़ियों को काट कर अंधाधुंध बहुमंजली इमारतें खड़ी की जा रही हैं और शहर के बीचोंबीच बसी नैनी झील पर खतरा मडरा रहा है। लेकिन सरकारी तंत्र लंबी चादर ताने सो रहा है। नवंबर 1841 में एक अंग्रेज पर्यटक बैरन ने नैनी झील की खोज की थी। लेकिन अब झील के जल स्तर में साल दर साल गिरावट आ रही है। इसकी वजहों का पता लगाने के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाए गए हैं। ब्रिटिश सरकार ने पहाड़ियों और झील की सुरक्षा के लिए नैनीताल में नालों का जाल बिछाया था। इन नालों की लंबाई करीब 53 किलोमीटर थी। सुरक्षा के उपाय सुझाने और उन पर अमल करने के लिए 6 सितंबर 1927 को गठित हिल साइड सेफ्टी व झील विशेषज्ञ समिति की एक दशक से कोई बैठक नहीं हुई है। उल्टा यह जरूर हुआ कि यह समिति अपने बनाए नियमों की ही तोड़ती रही है। शेर का डंडा पहाड़ी में वर्ष 1880 में जबरदस्त भूस्खलन में करीब 150 लोग मारे गए थे। उसके बाद राजभवन को वहां से हटाना पड़ा था। इस पहाड़ी पर नए निर्माण पर पाबंदी होने के बावजूद समिति ने वहीं रोपवे बनाने की अनुमति दे दी। राजनीतिक दबावों की वजह से पाबंदी वाले ऐसे कई इलाकों को सुरक्षित क्षेत्र घोषित कर दिया गया ताकि वहां इमारतें खड़ी हो सकें। पिछले दो–तीन दशकों में इलाके में पर्यटकों की तादाद के साथ साथ होटलों की संख्या भी तेजी से बढ़ी है। 1927 में शहर में केवल 396 पक्के मकान थे। लेकिन सदी के आखिर तक यहां 8,000 से ज्यादा पक्के मकान हैं। तमाम नियमों की ध ाज्जियां उड़ाते हुए वहां विभिन्न पहाड़ियों पर धड़ल्ले से निर्माण हो रहा है। नियम के मुताबिक, नैनीताल में कहीं भी दो मंजिलों से ज्यादा और 25 फीट से ऊंची इमारत नहीं बनाई जा सकती लेकिन यह नियम फाइलों में पड़े धूल फांक रहे हैं। निर्माण कार्यों से पैदा होने वाला हजारों टन मलबा हर साल झील में समा जाता है। 1961 में नैनीताल में केवल 20 होटल थे लेकिन अब इनकी तादाद एक हजार पार कर गई है। वहां के लोगों ने पर्यटकों से होने वाली कमाई को ध्यान में रखते हुए अपने घरों में ही होटल और गेस्ट हाउस बना लिए हैं। ऐसे में होटलों का कहीं कोई हिसाब नहीं है। 25 साल पहले से नैनीताल काफी बदल गया है। अस्सी के दशक में यहां महज कुछ होटल थे। लेकिन अब इन होटलों की भीड़ की वजह से माल रोड पर पैदल चलना काफी मुश्किल हो गया है। रोजाना पहाड़ का सीना चीर कर खड़ी होने वाली इमारतों ने झील के चारों तरफ फैले पहाड़ को लगभग ढक दिया है। वहां के स्थानीय लोगों का कहना है कि नैनीताल की झील के जल स्तर में साल दर साल गिरावट आ रही है। लेकिन इसके वजहों की पड़ताल के लिए कोई कदम नहीं उठाए जा रहे हैं अगर समय रहते इस झील को बचाने की दिशा में ठोस पहल नहीं हुई तो वह दिन दूर नहीं जब पर्यटक इस ओर से मुंह मोड़ लेगें। भूवैज्ञानिकों का भी कहना है कि भूकंप का एक हल्का झटका भी इस खूबसूरत शहर, जो उत्तर प्रदेश के बटवारे तक उसकी ग्रीष्मकालीन राजधानी हुआ करता था, के वजूद को मिटा सकता है।

देवभूमि में जो राहत कार्य चल रहा है वहां भी लोग अपना धंधा चला रहे हैं। वहां फंसे एक तीर्थयात्री ने जो बयां किया उस पर कुछ कहते नहीं बन रहा है। उन्होंने बताया कि महा–आपदा के समय प्राइवेट हैलिकॉप्टर कंपनियां धंधे पर उतर गई हैं। वह भी ठीक सरकार की नाक के नीचे। एक आदमी को हैलिकॉप्टर से बचाने का उनका रेट है दो लाख रूपये। तीर्थयात्रियों के एक समूह ने आपस में मिलकर करीब 20 लाख रूपये जुटाएं और खुद को हैलिकॉप्टर के जरिए बचा पाए। उत्तराखंड में हुई तबाही का पूरा आकलन होना अभी बाकी है। लेकिन किसी तरह प्रकृति की कैद से आजाद होकर वापस आये लोगों का विश्वास किया जाए तो रूह कांप जाती है। भुक्तभोगियों के अनुसार उत्तराखंड में प्रलय के साथ मौत की बारिश हो रही थी। प्रत्यक्षदर्शी बताते हैं कि वहां लाशों की चादर बिछ गयी है। सवाल यह उठता है कि आखिर ऐसी आपदाओं के लिये क्या प्रकृति ही जिम्मेदार है? हमें अब खुले दिल से स्वीकार करना होगा कि ऐसी आपदाओं के लिए जिम्मेंदार केवल इंसान है।

Admission Open

DELHI Paramedical & Management Institute Estd. 1996

DPMI®

Delhi Paramedical & Management Institute
Campus: B-20, New Ashok Nagar (Near New Ashok Nagar Metro Station), Delhi 110 096, Ph.: 011-22715390, 22710006
Email: dpmidelhi@yahoo.in Web.: www.dpmiindia.com

प्रथम पृष्ठ का शेष...

NAI Karnataka State Body Meeting in Bangalore

❑ ***Pramesh Jain***

Bangalore: Caution to the members to pay attention! Time to get strengthened! Stage getting prepared for the upcoming anniversary function! Yes, your Newspaper Association of India (NAI) has fabulously completed its 20 years with the strength of its members and now has stepped into the 21st year. On this occasion, the institution is going to hold its anniversary function in the month of November 2013 in Karnataka in the capital city Bangalore. Consequently, the members of Karnataka state committee of newspaper association of India (NAI) held meet at KC Palace club, after forming its new executive very recently. The members discussed and considered the primary needs of the journalist members to get the membership through a proper channel.

The emphasis was made on the objective of NAI to highlight the problems which have been plaguing the small and medium newspaper industry for the past so many years. A common platform at the national level was created for the members, to establish personal Contact with each other and have interactions on related problems and take up the same, with concerned authorities, on a collective basis. With its members (Daily, Weekly's, Bi Weekly's Fortnightly's, Monthly's, Online Digests & others) the NAI is also serving the national cause of having unity in diversity, in as much as its membership. Is spread throughout the length and breadth of the country, with newspapers-both national and regional- printed in diverse vernacular as well as English language being its associates.

NAI aims to encourage and support small and medium newspapers, journals, periodicals, etc., to create innovative sustainable social enterprises and aims to build a just, civil society in India.

The organization focuses on six key strategic priorities that collectively affect the newspaper industry: marketing, public policy, diversity, industry development, newspaper operations and readership. NAI aims to be a network that is inclusive and open, promotes free and independent media and participations and encourages the sharing of experience and knowledge between members. To focusing on the role that the regional newspapers play in the strengthening of our World's largest democracy. The emphasis would be how the regional newspapers of our democratic institutions with adherence to secular credentials. The strength of our democracy lies in the dissemination of information and these regional and vernacular language newspapers with their reach deep in the hinterland can and plays an effective role in the propagation of democratic ideas and advantages of people power.

The NAI, now in its 21st years of existence, being an organization spanning the length and breadth of India. (NAI) is an Association founded in the year 1993 by Late Dr. M R Gaur of New Delhi predominantly for small and medium Newspapers in the country. The Newspaper Association of India is registered in the year 1993 by the Government of India under SR Act XX1 of 1860 and is headquartered in New Delhi. The State offices have so far been established in Maharashtra, Tamilnadu, Kerala, Karnataka, Rajasthan, Punjab, Haryana, Orissa, Uttar Pradesh, Andhra Pradesh, Mizoram, Chhattisgarh and Pondicherry. Currently there are close to 7000 members spread across the length and breath of the country. It members are from all sections of the press and media, regional & national, vernacular & English and includes Daily, Weekly's, Bi Weekly's Fortnightly's, Monthly's and Online Digests.

The objective of NAI is To highlight the problems which have been plaguing the small and medium newspaper industry for the past so many years, To create a common platform at the national level for the members to establish contact and interact with each other on related problems so ad to address them through the association with concerned authorities, on a collective basis. It also aims To encourage and support small and medium newspapers, journals, periodicals, etc., to create innovative sustainable social enterprise that aims to build a just, civil society in India through responsible journalism. To further foster a spirit of serving the national cause of having unity in diversity demonstrated in the membership of the association and to establish Newspaper Association of India offices in all the states and districts of this country that can serve the small and medium newspaper establishments, especially the ones from non metros. It was also decided to encourage member newspapers to play a responsible role in social causes by actively organizing Social Responsibility Initiatives in the communities that they cater. Finally, to encourage citizen journalism and reporting at the grassroots level in the rural areas among the student community.

Newspaper Association of India focuses on six key strategic priorities that collectively affect the newspaper industry: marketing, public policy, diversity, industry development, newspaper operations and readership. NAI aims to be a network that is inclusive and open, promotes free and independent media participation in the network. It also provides a voice for its member publications and encourages sharing of not just news but also their experience and knowledge between members. It also encourages members to share best practices in the industry to collectively raise the standards of Indian journalism.

The decisions were made to facilitate the important role the regional newspapers play in the strengthening the World's largest democracy by adhering in letter and spirit to secular credentials and upholding all our democratic institutions to free, fair and complete dissemination of information.

Finally, these regional and vernacular language newspapers with their reach deep in the hinterland can and will continue to plays an effective role in the propagation of democratic ideals as envisioned in our constitution that will empower all sections of the society.

However, the members also felt a need for sending all the statements or other related issues only through the committee. The increasing of frequent meets was also accepted. Mr. Vipin Gaur, the general secretary of the organization presided over the session. The proposals were made to organize Seminars and awareness to the media student's cultural activities and to arrange workshops for helping the members. Frequent meets were planned to be held to take the other works into action. New Membership and Renewal will accept by state committee. National secretary - M.K Jain , National Org Secretary - Tha ve Swamy wal also the part of NAI Karnataka Body Meet .

New Karnataka State committee -: President - P. Shreedhar Reddy , Sr Vice President - Tiptur Raghu , General Secretary - M. Deepa , Secretary - H.N Shreedhar Murthy , Joint - Secretary - Babu Dinkar , Exe - Secretary - M.R Shreeniwas , Org-Secretary - Phool Singh , Media-Secretary , Mohan Raju , Cultural- Secretary - Venkatesh , Advisor's -: Adv. H.N Chandra Shekhar , Prof- Shailesh Raje urs.

धर्मस्थलों का व्यवसायीकरण

'विनीत नारायण

केदारनाथ से लेकर षेश उतराखंड

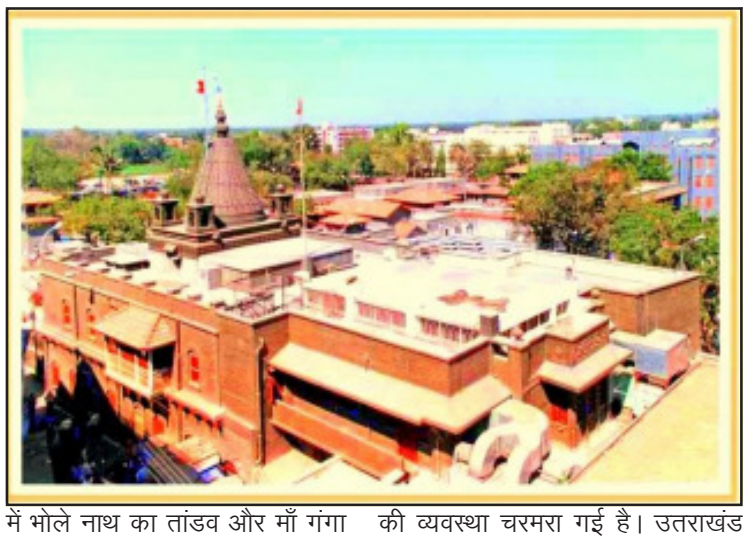

में भोले नाथ का तांडव और माँ गंगा का रौद्र रूप हम सबके सामने है। जिसने भोगा नहीं उसने टीवी पर देखा या अखबार में पढ़ा। सबके कलेजे दहल गये हैं पर यह क्षणिक चिन्ता है। हते–दस दिन बाद कोई नई घटना भयानक इस त्रासदी से हमारा ध्यान हटा देगी। फिर पुराना ढर्रा चालू हो जायेगा। इसलिए कुछ खास बातों पर गौर करना जरुरी है।

जब से देष में टीवी चैनलों की बाढ़ आयी है तब से धार्मिक प्रवचनों का भी अंबार लग गया है। हर प्रवचनकर्ता पूरे देष और दुनियां के लोगों को अपने–अपने तीर्थस्थलों पर रात दिन न्यौता देता रहता है। इस तरह अपने अनुयायियों के मन पर एक अप्रत्यक्ष प्रभाव डाल देता है। इसलिए वे पहले के मुकाबले कई सौ गुना ज्यादा संख्या में तीर्थाटन को जाने लगे है। संचार और यातायात के साधनों मे आयी आषातीत प्रगति इन यात्राओं को और भी सुगम बना दिया है। इस तरह एक तरफ तो तीर्थस्थल जाने वालों का हुजूम खड़ा रहता है और दूसरी तरफ सम्बंधित राज्यों की सरकारें इतने बडे हुजूम को संभालने के लिए कोई माकूल व्यवस्था नहीं कर रही है। नतीजतन निजी स्तर पर होटल, टैक्सी, धर्मषाला, व बाजार आदि कुकुरमुत्ते की तरह इन तीर्थस्थलों पर अवैध रुप से बढ़ते जा रहे है। जिससे इन सभी तीर्थस्थलों की व्यवस्था चरमरा गई है। उतराखंड का ताजा उदाहरण उसकी एक बानगी मात्र है। पिछले वर्शों में हमने बिहार, हिमाचल, राजस्थान और महाराश्ट्र के देवालयों मे मची भगदड मे सैकडों मौतों को इसी तरह देखा है। जब ऐसी दुर्घटना होती है तो दो–तीन दिन तक मीडिया इस पर षोर मचाता है फिर सब अगली दुर्घटना तक के लिए खामोष हो जाता है।

जरुरत इस बात की है कि तीर्थस्थलों के सही विकास, प्रबंधन व रखरखाव के लिए एक राश्ट्र नीति घोशित की जाये। इस नीति के तहत ऐसे सभी तीर्थस्थलों के हर पक्ष को एक केन्द्रीयकृत ईकाई अधिकार के साथ मॉनीटर करे और उस राज्य के सम्बंधित अधिकारी इस के अधीन हों। जिससे अनुभव, योग्यता, नेतृत्व की क्षमता और केन्द्र सरकार से सीधा समन्वय होने के कारण यह ईकाई देष के हर तीर्थस्थल के लिए व्यवहारिक और सार्थक नीतियाँ बना सके। जिन्हें षासन से स्वीकृत करा कर समयबद्ध कार्यक्रम के तहत लागू किया जा सके। इसके कई लाभ होंगे एक तो तीर्थस्थलों के विकास के नाम पर जो विनाष हो रहा है वो रुकेगा, दूसरा योजनाबद्ध तरीके से विकास होगाः तीसरा किसी भी संकट की घड़ी में अफरा तफरी नहीं मचेगीः

इसके साथ ही आवष्यक है कि हज यात्रा की तरह या कैलाष–मानसरोवर की तरह षेश तीर्थस्थलों में भी यात्रियों के जाने की सीमा को निर्धारित करके चले। देष दुनिया के लोगों देष दुनिया के लोगों से तीर्थ यात्राा पर जाने के लिए आवेदन लिए जायें। उन्हें एक पारदर्षी प्रक्रिया के तहत षारीरिक क्षमता के अनुसार चुना जाये। फिर उन्हें सम्बंधित यात्राओं के जोखिम के बारे में प्रषिक्षित किया जाये, जिससे वे ऐसी अप्रत्याषित त्रासदी में भी अपनी स्थिति संभालने मे भी सक्षम हों। इसके साथ ही तीर्थस्थलों पर जो अरबों रुपया साल भर में दान में आता है। उसे नियंत्रित कर उस तीर्थ स्थल के विकास की व्यवहारिक योजनाएं तैयार की जायें। जिसमें पर्यावरण और सांस्कृतिक विरासत की दृश्टि से संवेदनहीनता न हो, जैसा आज तीर्थस्थलों में विकास के नाम पर दिखाई दे रहा है। जिससे इन तीर्थ स्थलों का तेजी से विनाष होता जा रहा है। इस पहल से साधनों की कमी नहीं रहेगी और दानदाताओं को अपने प्रिय धर्मक्षेत्र के सही विकास में योगदान करने का अवसर प्राप्त होगा। वरना यह अपार धन चन्द लोगों की जेबों में चला जाता है। जिसका कोई सद्उपयोग नहीं होता। यहां इस बात का विषेश ध्यान रखा जाये कि जिस धर्म क्षेत्र में ऐसा धन एकत्र हो रहा हो उसे उसी धर्मक्षेत्र के विकास पर लगाया जाये। अन्यथा इसका भारी विरोध होगा। इस बात का भी ध्यान रखना आवष्यक है कि सरकारी अधिकारी सहयोग करने के लिए तैनात हों, रूकावट ड़ालने के लिए नहीं। योजनाओं के क्रियान्वन मे भी दानदाताओं के प्रतिनिधिओं का का भी नियंत्रण रहना चाहिए।

उतराखंड की त्रासदी पर आसूं बहाना और वहां की पिछली हर सरकार को कोसना बडी स्वाभाविक सी बात है। क्योंकि भाजपा और कांग्रेस की इन सरकारों ने ही उतराखंड में प्रकृति के विरोध में जाकर अंधाधुंध अवैध निर्माण को संरक्षण प्रदान किया है। जिसका खामियाजा आज आम जनता को भुगतना पड़ रहा है। पर इस बर्बादी के लिए आम जनता भी कम जिम्मेदार नहीं। इसने तीर्थ स्थाटन का मूल सिद्धान्त ही भूला दिया है। पहले मन की षुद्धि और आत्मा की वृद्धि के लिए जोखिम उठाकर तीर्थ जाया जाता था। तीर्थ जाना मानों तपस्चर्या करना। आज ऐसी भावना से तीर्थ जाने वाले उंगलियों पर गिने जाते है। हम जैसे ज्यादातर लोग तो तीर्थ यात्रा पर भी गुलछर्रे उडाने और छुट्टियाँ मनाने जाते है। इससे न सिर्फ तीर्थस्थलों की दिव्यता नश्ट होती है बल्कि वहां के प्राकृतिक संसाधनों का भी भारी विनाष होता है। जो फिर ऐसी ही सुनामी लेकर आता है। इसलिए अब जागने का वक्त है। हम अगर सनातन धर्म के अनुयायी हैं तो हमें अपने सनातन धर्म की इस अत्यावष्यक सेवा के लिए उत्साह से आगे बढ़ना चाहिए।

Sushil Kumar Pandeyy
9958561832, 9213796552
MONEY MANAGERS
CONSULTANT- TAX MATTER, RETAIL ASSETS, WORKING CAPITAL
PAN CARD, ITR, BOOK, KEEPING, SALES TAX, PF, ESI, FACTORY ACT.
CMA Data, Cash Credit/Over Draft/WCDL/LAP. PL, DOD Limit, Housing Loan, Vehicle Loan insurance & Investment solution
Office:- A-115, Vakil Chamber, Top Floor, Shakarpur Delhi-92
Resi- D-17, Ganesh puri, Sahibabad, Ghaziabad (U.P.)

भिवानी, महेन्द्रगढ़ एनसीआर में शामिल

नयी दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) योजना बोर्ड ने हरियाणा के भिवानी एवं महेंद्रगढ़ तथा राजस्थान के भरतपुर जिलों को भी एनसीआर में शामिल करने को मंजूरी दे दी है। इसके साथ ही जयपुर को एक काउंटर मैगनेट क्षेत्र के रूप में चिन्हित करने के राजस्थान सरकार के आग्रह को भी एनसीआर योजना बोर्ड ने स्वीकार कर लिया है। उत्तर प्रदेश उप क्षेत्र लिए उप क्षेत्रीय योजना को भी मंजूरी दे दी गयी है।

उधर, हरियाणा सरकार द्वारा जारी विज्ञप्ति में कहा गया है कि भिवानी एवं महेंद्रगढ़ के साथ–साथ जींद और करनाल भी एनसीआर में शामिल कर लिये गये हैं।

हरियाणा के मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा ने इसके लिए केंद्रीय शहरी विकास मंत्री कमलनाथ का आभार भी जताया है। मुख्यमंत्री ने कहा है कि एनसीआर में शामिल हो जाने से इन जिलों के विकास में तेजी आयेगी। एनसीआर योजना बोर्ड की आज यहां हुई बैठक में ये महत्वपूर्ण फैसले लिये गये। केंद्रीय शहरी विकास मंत्री कमलनाथ क अध्यक्षता में हुई इस बैठक में केंद्रीय आवास एवं शहरी गरीबी उन्मूलन मंत्री सुश्री गिरिजा व्यास, हरियाणा के मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा, दिल्ली के उप राज्यपाल तेजेंद्र खन्ना , दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित और केंद्रीय शहरी विकास सचिव सुधीर कृष्णा के अलावा संबंधित राज्यों और मंत्रालयों के वरिष्ठ अधिकारी भी मौजूद थे।

सूत्रों के मुताबिक एनसीआर में क्षेत्रीय त्वरित परिवहन व्यवस्था की जरूरत पर जोर देते हुए कमलनाथ ने बैठक में कहा कि ऐसी व्यवस्था से सड़कों पर वाहनों की संख्या घटेगी और प्रदूषण का स्तर भी कम होगा। उन्होंने बताया कि इस बाबत गठित समिति ने सिफारिश की है कि एक राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र परिवहन निगम स्थापित किया जाये, जिसके पहले चरण में दिल्ली–पानीपत (110 किलोमीटर), दिल्ली–अलवर (180 किलोमीटर) और दिल्ली–मेरठ (90 किलोमीटर) को जोड़ा जाये। एनसीआर योजना बोर्ड की बैठक को संबोधित करते हुए हरियाणा के मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा ने कहा कि एनसीआर के हरियाणा उप क्षेत्र के विकास से दिल्ली में लोगों का जाना कम हो गया है। गुडगांव के विकास से उलटे दिल्ली से लोग बाहर जाने लगे हैं। मुख्यमंत्री ने गुडगांव शहर के विस्तार के मद्देनजर उसे जवाहरलाल नेहरू शहरी नवीकरण मिशन के अंतर्गत लाने की मांग भी की ।

Shri Anil Jaju Director of Heart Care Foundation of India Passes Away

New Delhi-Shri Anil Jaju Director Heart Care Foundation of India passed away at 8:30 PM on 5th July 2013 due to a sudden cardiac arrest. Anil Jaju was the Director of the Foundation and made an immense contribution to the Foundation's Community Services.

He was the Past President of Maheshwari Club, an Industrialist and a renowned Social Worker. He always lived his life according to his teaching that activities for the mankind should be the responsibility of each and every person.

On his death Padma Shri and Dr BC Roy National Awardee Dr KK Aggarwal, President Heart Care Foundation of India said that we have lost a great mentor and health reformer. We will keep his work and guidance alive forever for mankind.

District consultative committee meeting of bankers

Vikram Kumar Jain

Nellore: District consultative committee meeting of bankers has approved Rs 4837.58 crore credit plan for

SPSR Nellore district for 2013-14 here on Wednesday.

Finance Minister Anam Ramanarayana Reddy took part in the meeting and appreciated the bankers on behalf of the government for achieving the credit plan targets related to crop loans during 2012-13.

Speaking on the occasion, he urged the bankers to provide education loan to the extent of Rs 5 lakh for merit students among SCs/STs to pursue higher education while referring to Rs 10 lakh being offered for such students by the government under SC/ST sub-plan.

He asked bankers to extend financial assistance liberally to the farmers to buy solar pump sets while referring to power crisis affecting the farm sector. He said that it is difficult to the farmers to purchase solar pump sets since a 5 HP motor would cost around Rs 5 lakh.

He said that 50 per cent of the cost is being given as subsidy by both state and central government and the farmers will be able to acquire them if banks sanction at least 70 per cent of the balance amount as term loan.

He stressed the need for similar support to those installing solar rooftops. The minister also sought banks support for fair price dealers to make advance payment to civil supplies department for supply of essential commodities under government flagship programme, Amma Hastam.

Expressing concern over lack of godown space in the district to store paddy, he requested the bankers to extend loans to construct godowns in the district. He said that major a portion of the available godown space is being used by civil supplies for Mana Biyyam scheme. Pointing to Rs 2,000 crore earmarked for six lakh youth of the state to start self-employment ventures, he sought banks' backing for the scheme. He reiterated the need to no frills accounts to all the farmers in the district to pass various subsidies directly to their accounts. District collector B. Sridhar, joint collector B. Lakshmikantham, Syndicate Bank AGM Narasimha Rao and Lead Bank district manager T. Venkateswar Rao were present apart from senior officials of different banks in the meeting.

राजस्थानी को मान्यता न मिलना दुर्भाग्यपूर्ण

जन्मदिवस पर पद्मश्री रानी लक्ष्मी कुमारी चूंडावत ने व्यक्त की अपनी पीड़ा

ÚæÁSÍæÙè Öæáæ ·¤è âÂçâh Üç¹·¤æ ÂkŸæè ÚæÙè Üÿ×è·¤×æÚè ¿ÇæßÌ Ù ·¤ãæ ãç·¤ {® ßá ·¤ Ü•Õ âƒæá ·¤ ÕæÎ Öè ÚæÁSÍæÙè Öæáæ ·¤ô âß Ïæ çÙ·¤ ×æ‹ØÌæ Ù ç×ÜÙæ ÎÖæ,ØÂ‡æ ã ÌÍæ §â·¤ çÜ° ÂÎàæ ß Îàæ ·¤è âÚ·¤æÚ Îôáè ãÐ ¥ç¹Ü ÖæÚÌèØ ÚæÁSÍæÙè Öæáæ ×æ‹ØÌæ âƒæá âç×çÌ ·¤è ¥ôÚ â âô×ßæÚ ·¤ô ©Ù·¤ ~}ßæ Á‹×çÎÙ ÂÚ ÕÙèÂæ·¤ çSÍÌ ©Ù·¤ çÙßæâ ÂÚ ¥æØôçÁÌ °·¤ â•×æÙ â×æÚôã × âƒæá âç×çÌ ·¤æØ·¤Ìæ¥ô ·¤ âæÍ ÕæÌ¿èÌ ·¤ ÎõÚæÙ ©‹ãôÙ Øã ÂèÇæ ÃØQ¤ ·¤èÐ ¥ÂÙè ¥SßSÍÌæ ·¤ ÕæßÁÎ ©‹ãôÙ ·¤ãæ ç·¤ ÚæÁSÍæÙè Öæáæ çßE ·¤è â×hÌ× Öæáæ¥ô × â °·¤ ã ¥õÚ ·¤ÚôÇ¸ô Üô» §â Öæáæ ·¤ô ÕôÜÌ ãÐ

ÚæÁSÍæÙè Öæáæ ·¤ô ¥ÂÙæ ÎÁæ çÎÜæÙ ¿æçã°Ð âç×çÌ ·¤ âSÍæÂ·¤ °ß ¥‹ÌÚÚæCèØ â»Æ·¤ Üÿ×‡æÎæÙ ·¤çßØæ °ß ·¤æØ·¤æÚè ÚæCèØ ¥ŠØÿæ ·¤.âè. ×æÜ Ù ¿ÇæßÌ ·¤ô ×æÜæ, àææÜ °ß ÂàæçSÌ Â˜æ ÂÎæÙ ·¤Ú â•×æçÙÌ ç·¤ØæÐ §â ¥ßâÚ ÂÚ ×æÜ Ù ·¤ãæ ç·¤ ÚæÁSÍæÙè Öæáæ ·¤è ÂçÌçDÌ âæçã˜Ø·¤æÚ °ß ÖæÚÌèØ ÚæÁÙèçÌ × y® ßá Ì·¤ Îàæ °ß ÂÎàæ ·¤è âßæ ·¤ÚÙ ßæÜè ÚæÙè âæçãÕæ Ù {® ßá Ì·¤ âæçã˜Ø âÁÙ ·¤Ú ÚæÁSÍæÙè Öæáæ ·¤ âæçã˜Ø Ö‡ÇæÚ × Ÿæè ßçh ·¤è ã §âçÜ° ÂÎàæ ·¤è ÁÙÌæ ·¤è ¥ôÚ â âƒæá âç×çÌ Ù ©Ù·¤æ â•×æÙ ·¤Ú ¥ÂÙæ ÈÁ çÙÖæØæ ãÐ â•×æÙ â×æÚôã × ÚæÙè âæçãÕæ ·¤ ÂçÚÁÙ °ß âƒæá âç×çÌ ·¤ ¥ô×‹Î Öæ, âÖæ»èØ ×ãæ×¢æè §‹Î çâã ãÚ×æÇ, ÚƒæßèÚ çâã ¥æçÎ Ù ©Ù·¤ô SßSÍ ß Îèƒææ¸Ø ÁèßÙ ·¤ çÜ° àæÖ·¤æ×Ùæ° ÎèÐ

AGAINST DRUG ABUSE AND ILLICIT TRAFFICKING

Message of UN Secretary-General Ban Ki-moon

This year I visited the San Patrignano drug rehabilitation centre in northern Italy where more than 1,200 young women and men from 28 countries are learning how to free themselves from the curse of addiction and enjoy dignified, productive lives. Their road is not easy. It demands courage, commitment and the compassion of dedicated mentors. But the members of this inspiring community understand that they are fortunate. All over the world, drugs threaten the health and welfare of youth and children, families and communities, and the billions of dollars generated by the drugs trade feed corruption, enhance the power of criminal networks and create fear and instability.

Illegal drug trafficking is a clear obstacle to development. This cross-border problem requires a robust and coordinated law enforcement response within and among countries. Tackling organized crime and the illicit drugs trade is a shared responsibility. But the rule of law is only part of the equation. For instance, farmers dependent on the cultivation of illicit drugs such as coca, marijuana and opium must be offered alternative livelihoods, while drug users and addicts need help not stigmatization.

A human rights and science-based public health approach is the only sound basis for preventing and treating addiction and related consequences such as HIV transmission through unsafe injecting practices. We must also address threats such as the emerging problem of new psychoactive substances, many of which are not under international control.

BRIDGING BETWEEN THE correspondents AND COMMONS

Award for achievers! Boon for the public! Committed to the constitution! Yes, these are the brilliant doctrines echoed by the council of media and satellite broadcasting organsiation, which is striving hard to provide a platform for the implementation of the fundamental rights and agendas of Indian constitution.

The Indian constitution at its foundation aims at providing rights of right to freedom, freedom against exploitation at its fundamental level and right to freedom of thought, expression and speech as necessities. As per these rights, the Indian citizens are free to express their expression with speech without de-formatting the judiciary and nation. Any protests can be done with peace and without violating the sovereignty of the state. All these rights are now furnished with right to information act, through which, even a common person can get any information regarding bureaucracy with a simple procedure and can question any authority to fulfill their duties of getting good administration in the country.

Media is the fourth organ of administrative system, which is having complete freedom to condemn, criticize and question all the other organs as such of legislature and executive and even can draw the attention of judicial system without contemplating the court system with basic facts and figures. The council of media and satellite broadcasting (CMSB) assures the rights of freedom of writing, thought and speech for the journalists to utilize the tool of pen as serene sword to cut the malfunctioning of the system and revealing the facts for the populace with an impartial attitude. The organization aims at providing a proposal for linking the public with the press to enhance the hands of writing personnel. The award function which was detained by the organization was primarily made to honor the esteemed journalists striving hard to carry out the facts to the public. The central additional secretary of CMSB Mr. Kuleshwar Somkar was key person for the entire event, who laid a stress on the cordial relationship between the population and the press. The chairperson of CMSB Mr. Bikky Bangari presided over the occasion, who pressed the need for recognizing the accuracy for staging information for the people. The programme was presided over by a number of media magnets as such of

The society can be cleaned and systematized only with the well working of all the organs of administration, where the exertion of media is comparatively far above the ground, as the media has to balance the pressures of accuracy, momentum,

"Vipin Gaur" has been a source of inspiration for many young media persons who has done lot of good work for the development of journalism. He has brought many laurels to the Nation. He deserves much bigger award said "Bicky Bangari" President council of Media and Satellite Broadcasting (CMSB) on the occasion of 1st Media and Social Service Excellence Awards at Country Club in Bangalore.

I am happy as well as emotional that federation has noted down my hard work and efforts in the field of journalism. I am very obliged to the federation for the honor & they called me to Bangalore as a "Guest of Honor". The event was attended by all the renowned media persons from all the segments.

List of Award

Journalist of the Year- Mr. Ashish Jain, Mr Harsh Kumar Pandey , Suman Sharma, Weekly/ Fortnight, Newspaper of the Year-Suddhi Darshini, Crime Diary, Emerging Digital News Channel of the Year -MG Television, A TV Akash Pandey (W.B). The awards were also given to the radio and web medias and under such category, FM Radio of the Year-Noida Radio 107.4, Daily Newspaper of the Year -

Lok Swar (Hindi), The South India Times, Afternoon Voice, Akash Jyoti, Web Media of the year -Oneindia.in, India Ambassador of the Year (Indian)- N. R. Narayana Murthy, Civil Servant (IAS) of the Year -M N Vidyashankar, Principal Secretary to Govt. Of Karnataka, Civil Servant (IPS) of the Year- Mr. L R Pachau,DG & IGP, Karnataka Police, Social Worker of the Year -Jayant Kiri (Chattisgarh), Monalisa Mohanty, Social Organization of the Year- Access Development Services, Help Us Help Them, Special Teacher for Children Development of the Year- Dr. Savita Sai Ram, Doctor of the Year-Dr. Manisha Singh(Fortis Hospital), H Rita Lobo(St. Johns Medical College), Public sector Enterprises / Government undertaking Excellence in CSR-NMDC Ltd, Rural Doctor of the Year-Dr. J Premkumar (TN), Entrepreneur of the Year- Sh. Parichaya Dash (Odisha), G Sidappa

the Souvenir was also Published. As per the Program List the portfolios were divided as Mr. Kuleshwar Sonkar, National Vice President, Mr. Santosh Lohar, National Joint Secretary, Mr. Leo Christy, State President-Karnataka, Mr. Prabhakar Thota, State President-Andhra Pradesh, Mr. Maru Achie, State Joint Secretary-Karnataka, Mr. Bibash Baidya, Additional Secretary-Karnataka, Mr. Chinmaya Kumar Bhoi - State Coordinator -Odisha, Mr. Vineet Singhal -State Coordinator - KA, Mr. Biswajit Nandy - State Executive -KA, Mr.Pramesh S Jain - Secreatery -KARNATAKA.

Publishing on 10th of every month
RNI No. 62500/95
REGD. No. DL (E)-01/5149/2012-2014
LICENCE TO POST WITHOUT
PRE-PAYMENT No. U(C)223/12-14

To,

If undelivered, Please return to:
न्यूज़ पेपर्स एसोसिएशन
ऑफ इण्डिया
POST BOX 9235, NEW DELHI-110 092

यदि आप लेख, रचना, समाचार, विचार प्रेषित करना चाहते हैं तो आप अपने अप्रकाशित लेख निम्न पते पर भेजें।

आपको ***NAI*** का यह अंक कैसा लगा, इस बारे में अपने सुझाव हमें निम्न पते पर भेजें।

एन. ए. आई.
A-115, Vakil Chambers, Top Floor,
Shakarpur, Delhi-110092, Ph.: 011-22058133

Editorial Board

Founder	Late Dr. M. R. Gaur
Editor Publisher-Printer	Vipin Gaur
Counsultant Editor:	Dr. Smita Mishra
Managing Editor:	Dilip Kumar
	K. R. Arun
Legal Advisors:	Nikhat Anjum Malik
Advocate Delhi Highcourt	Rajesh Sharma
	Adv. P. Yadav
Office Secretary	Pawan Pant

- Bureau Chief -

Guwahati:	Runu Hazarika
Mumbai:	Mr. Dinesh K. Mishra
Bangalore:	Mr. Pramesh Jain
Jaipur :	Mr. Bhanwar Singh Ranawat
Chennai:	Mr. P.C.R. Suresh
M.P. & C.G.	Mr. O. P. Jain
Kerela	Mr. Suvarna Kumar
Goa	Dr. Vivek Gaitonde

Printed, Published by Vipin Gaur on behalf of News papers Association of India, Printed at Mayank Offset Process 794/95 Guru Ramdas Nagar Ext. Laxmi Nagar Delhi-92 and Published from J-51, DLF Dilshad Delhi-95, Editor: Gayatri Gaur. All disputes settled in Delhi Court only.